17-18

ISSN 2231- 6671

IMPACT FACTOR 4.25

International Registered & Recognized

Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

Hi-TECH RESEARCH ANALYSIS

UGC APPROVED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

Issue : XV, Vol. - III
Year - VIII, (Half Yearly)
Feb. 2018 To July 2018

Editorial Office :
'Gyandev-Parvati',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Contact : 02382 - 241913
09423346913 / 09503814000
07276305000/ 09637935252

Website
www.irasg.com

E-mail :
interlinkresearch@rediffmail.com
visiongroup1994@gmail.com
mbkamble2010@gmail.com

Published by :
JYOTICHANDRA PUBLICATION
Latur, Dist. Latur - 413531 (M.S.)India

Price : ₹ 200/-

CHIEF EDITOR

Dr. Balaji G. Kamble
Research Guide & Head, Dept. of Economics,
Dr. Babasaheb Ambedkar Mahavidyalaya,
Latur, Dist. Latur.(M.S.) (Mob. 09423346913)

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Milind V. Lokhande
Dept. of Zoology,
Indira Gandhi (Sr.) College,
Nanded, Dist. Nanded (M.S)

Scott. A. Venezia
Director, School of Business,
Ensenada Campus,
California, (U.S.A.)

Dr. Omshiva V. Ligade
Head, Dept. of History
Shivjagruti College,
Nalegaon, Dist. Latur.(M.S.)

Bhujang R. Bobade
Director Manuscript Dept.,
D. A. & C. Research Insititute,

Dr. Dileep S. Arjune
Professor & Head, Dept. of Economics
J. E. S. College,
Jalna, Dist. Jalna(M.S.)

Dr. U. Takataka Mine
Tokiyo (Japan)

Dr. Babasaheb M. Gore
Dean- Faculty of Education & M.C.
Member,S.R.T.M.U, Nanded.(M.S.)

Dr. Nilam Chhanghani
Dept. of Economics,
KNG Mahavidyalaya
Karanja Lad, Dist. Washim (M.S.)

DEPUTY-EDITOR

Dr. G. V. Menkudale
Dept. of Dairy Science,
Mahatma Basweshwar College,
Latur, Dist. Latur.(M.S.)

Dr. C.J. Kadam
Head, Dept. of Physics,
Maharashtra Mahavidyalaya,
Nilanga, Dist. Latur.(M.S.)

Dr. Balaji S. Bhure
Dept. of Hindi,
Shivjagruti College,
Nalegaon, Dist. Latur.(M.S.)

Dr. Bharat S. Handibag
Dean, Faculty of Arts,
Dr. B.A.M.U. Aurangabad(M.S).

Dr. S.B. Wadekar
Dept. of Dairy Science,
Adarsh College,
Hingoli, Dist. Hingoli.(M.S.)

Dr. Shivaji Vaidya
Dept. of Hindi,
B. Raghunath College,
Parbhani , Dist. Parbhani.(M.S.)

CO-EDITORS

Dr. R.N. Salve
Head, Dept. of Sociology,
Shivaji University,
Kolhapur, Dist. Kolhapur.(M.S.)

Ghansham S. Bavlskar
Dept. of English,
RNC & NSC College,
Nasik, Dist. Nasik.(M.S.)

Dr. Kailash Tombare
Head, Dept. of Economics,
Devgiri Mahavidyalaya,
Aurangabad.(M.S.)

Dr. Kailash R. Nagulkar
Head, Dept. of History,
Gulab Nabi Azad College,
Barshi Takli, Dist. Akola.(M.S.)

S.P. Mahavidyalaya, Bhoom
Dist. Osmanabad

Issue - XV, Vol. III
HI-TECH RESEARCH ANALYSIS
IMPACT FACTOR 4.25
ISSN 2231- 6671
Feb. 2018 To July 2018
36

5

महात्मा फुले के समाजविषयक विचार

तानाजी रामभाऊ बोराडे
संशोधक विद्यार्थी
जे.जे.टी.युनिव्हर्सिटी, झुंझुनू, राजस्थान

Research Paper - Sociology

महात्मा फुले एक समाजिक क्रांती के अग्रणी नेता थे। उन्होंने अपने पूरे जीवनभर कें इतिहास में सामाजिक स्वातंत्र्य का विचार एवं आचार किया। क्योंकि सामाजिक अधोगति ही राष्ट्र का नाश करती है। यह सब जानकर शिक्षा और सामाजिक समता के लिए कार्य किया। इसलिए आज भी उनकी प्रतिमा एक समाज शिक्षक की तरह है।

समाज जीवन की स्थिरता जब ढलने लगती है, तब विचारों की ग्लानी होती है। नीति का विपर्यास होता है। और मनुष्य पशु बनता है। तब समाज को सुधारने के लिए कोई तो महात्मा प्रकट होता ही है। जैसे-वह बुध्द होयेंगे, सॉक्रेटिस, महात्मा फुले या डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर होंगे। यह सब समाज पुरुष वेदनाओं के रास्ते पर चलनेवाले है। उनके रास्तों पर विष का प्याला अवमान, अवहेलना प्रताडना, शस्त्रों का घाव आदि सहने की क्षमता उनके पास थी।

शुद्रातिशुद्र समाज में बहुत बडा अज्ञान, दु:ख, शोषण और दरिद्र था। जीवन में दु:ख को भोगना ही पूर्व जन्म के पापों का फल समझकर यह समाज चुपचाप दु:ख को सहते हुए जिवन बिताते थे। परंपरा के रीति-रिवाजोसे बंधे हुए आम मनुष्य की तरह जीवन जिते थे ऐसे समाज को जागृत करके उनका आत्मसम्मान और खुद के दु:ख, गरीबी, दास्य प्रथा के प्रति आवाज उठाने को प्रेरित करने का महान कार्य महात्मा फुले ने किया इसलिए उनको सामाजिक क्रांतिकारक कहा जाता है।

उन्नीसवी शताब्दी के महात्मा फुले यह एक श्रेष्ठ समाज क्रांतिकारक थे। इस देश में

S.P.Mahavidyalaya, Bhoom
Bhoom
Ta.Bhoom Dist.Osmanabad

सामाजिक क्रांति के वे एक अग्रदुत है। आधुनिक काल में सामाजिक क्रांति का विचार सबसे पहले उन्होंने रखा। वर्णव्यवस्था, जातीव्यवस्था, शुद्रातिशुद्र, ब्राम्हणशाही, स्त्री सुधारणा, शिक्षा आदि महत्वपुर्ण विषयों पर उन्होंने सुक्ष्म दृष्टि से अपने विचार प्रकट किये है।

महात्मा फुले का सामाजिक विचारों का केंद्रबिंदु मानव के नैसर्गिक अधिकार ही थे। अंग्रेजी शिक्षा में प्रोटेस्टंट पंथ में खिस्ती धर्मापदेशको का साथ और साथ ही साथ थॉमस पेन का 'Rights of Man' इस रचना का पठन इन सबके कारण महात्मा फुले के समता के विचारोंको गती मिली। "मनुष्य जन्म से ही स्वतंत्र होता है किंतु बाद में अनैसर्गिक बंधनों से जखडता जाता है।" यह रुसो के विचार महात्मा फुले के मन में बिंम्बीत गया था। सामाजिक संस्था, रुढी, शिष्टाचार इनके बंधन में ढेर सारे लोग बंधे हुये होते है। इन सबसे उन लोगों को मुक्ति देने से ही उनका सर्वागीण विकास हो सकेगा। ऐसे ही पाश्चात्य देश में उदारमतवादी विचारवंतो की जो धारणा थी उसके साथ ही महात्मा फुले पूरी तरह से समरस हो गये थे। उनके स्वानूभूती से उनको जो एक मुलग्राही दृष्टि प्राप्त हो गई उसको व्यापक विचारों की साथ मिलने से वह ज्यादा से ज्यादा सुक्ष्म और व्यापक बनती गई इसलिए उन्होंने हिन्दुओं के वर्णव्यवस्था का विरोध किया।

स्त्री और पुरुष समाज के महत्वपूर्ण अंग है। इन दोनो में भेदाभेद महात्मा फुले को स्वीकार नहीं था। अगर स्त्री और पुरुष इनमें से कोन श्रेष्ठ है यह जानना है तो उनके मतानुसार स्त्री ही श्रेष्ठ है क्योंकि वह हम सबको जन्म देनेवाली है। बचपन से लेकर हमारी निस्वार्थ रुप से सेवा करती है। नही हमें चलना बोलना बहुत सारे अच्छे संस्कार सिखाती है। इसके लिए एक दुनिया में श्रेष्ठ कहावत है। 'सबके नेकी फिर सकते है किंतु अपने जन्मदाता माता की भलाई कभी नहीं फिर सकते'। इससे निसंशय रुप से पुरुष से स्त्री ही श्रेष्ठ लगती है।

संदर्भ संकेत :-

१) महात्मा फुले यांचा शिक्षणविचार - गंधारे द.के. पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे-३०, प्रथमावृत्ती १० मार्च २०१३ए पृ.क्र. ५४

२) दीपस्तंभ चरित्रवनातील आनंदयात्रा- शिवाजीराव भोसले, अक्षरब्रहम प्रकाशन-पुणे- ३०, प्रथमावृत्ती एप्रिल १९९४, पृ.क्र.४६

३) महात्मा फुले समग्र वाङ्मय- य.दि.फडके (संपादक), महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृति मंडळ, मुंबई, प्रथमावृत्ती एप्रिल १९६९, पृ.क्र.१३६

४) डॉ.भीमराव रामजी आंबेडकर चरित्र, खंड - ची.भ.खैरमोडे, सुगावा प्रकाशन, पुणे, प्रथम आवृत्ती १९९२, पृ.क्र.१३४

५) समाजसुधारकांची तुतारी- राऊत अनंत, कैलाश पब्लिकेशन्स, औरंगाबाद, प्रथमावृत्ती जुन २०१६, पृ.क्र. ६३

S.P.Mahavidyalaya, Bhoom Tq.Bhoom Dist.O.
BHOOM

PRINCIPAL
S.P.Mahavidyalaya, Bhoom
Dist.Osmanabad